A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

अष्टपदी गायन शैली का शास्त्रीय संगीत में अस्तित्व प्राचीन काल से वर्तमान तक

Anukrati Rawat
Research Scholar, Dr Harisingh Gour Central University, Sagar (M.P.)

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 21 June, 2026

Rawat, A.. (2026). ashtapadi gayan shaili ka shastriya sangeet mein astitva prachin kaal se vartmaan tak. Swar Sindhu, 14(1), 413-416.

सार

अष्टपदी गायन शैली ने मध्यकाल से लेकर वर्तमान काल तक के राजनीतिक परिवर्तनों, सांस्कृतिक संक्रमणों, राज दरबारी आघातो,विदेशी आक्रमणों जैसी हर परिस्थिति को पार करते हुए वर्तमान में भी शास्त्रीय संगीत जगत में एक अनूठी छाप बनाई हुई है इससे यह सिद्ध होता है कि अष्टपदी गायन शैली प्राचीन काल की रूढ़ियों से बधीं हुई कोई मृत विधा नहीं है बल्कि यह निरंतर प्रवाहमान एक ऐसी त्रिवेणी है जिसमें संगीत, साहित्य और नृत्य का अनुपम संगम होता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में अष्टपदी की प्रासंगिकता और उसके अस्तित्व का मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि तकनीकी विकास और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के बावजूद यह गायन शैली आज भी अपनी शास्त्रीय गरिमा के साथ जीवन्त है।

मुख्य शब्द- *अष्टपदी, प्रबंध, गीत गोविंद, शास्त्रीय नृत्य*

अष्टपदी से आशय व स्वरूप

अष्टपदी का शाब्दिक अर्थ आठ चरण से है जिसका आशय है 8 चरणों या आठ पदों के संग्रह से बना हुआ भजन या गीत। अष्टपदी के रूप में मुख्यतः गीत गोविंद के संस्कृत भजन आते हैं जिनकी रचना 12वीं शताब्दी में महाप्रभु जयदेव द्वारा की गई थी इसके पश्चात अष्टपदी नामक गीत विधा की रचना और भी कई विद्वानों द्वारा की गई किंतु प्रमुख रूप से अष्टपदी के रचनाकार जयदेव जी ही माने जाते हैं अष्टपदी एक सांकेतिक रचना है जिसका अस्तित्व मध्यकालीन शास्त्रीय संगीत की प्रबंध गायन शैली के अंतर्गत माना गया है अष्टपदी रचना उस प्रकार के संगीत से संबंधित है जहां कविता और राग समान महत्व के हैं अष्टपदियां आध्यात्मिक गूढ विधा और दिव्य प्रेम के विषय में उत्कृष्ट कृति मानी जाती है।जयदेव जी की यह रचना अध्यात्मिक भक्ति और संगीत का परस्पर समन्वय है इसमें भक्ति भाव के साथ राग, स्वर, ताल लय, छंद, रस आदि का भरपूर प्रयोग किया गया है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

ग्रंथो से प्राप्त जानकारी के अनुसार अष्टपदियों का इतिहास पुराणों से जुड़ा हुआ है अष्टपदी की रचना का आधार वेदों और पुराने को ही माना गया है इसमें आठ पद होने का कारण भी वेदों से ही जुड़ा है। अष्टपदियों की रचना दसवें पुराण ब्रह्मवैवर्तपुराण के आधार पर हुई है रचयिता वेदव्यास जी ने श्री राधा कृष्ण की श्रृंगार परक लीलाओं का वर्णन इस पुराण में किया है इसके साथ गर्ग संहिता जो की एक तरह से पुराने की ही व्याख्या करती है उसमें भी श्री राधा कृष्ण की लीलाओं का प्रेम प्रसंग का वर्णन प्राप्त होता है इन्हीं दो ग्रंथों को आधार मानकर अष्टपदी की रचना की गई है।[1] आध्यात्मिक दृष्टिकोण के आधार पर श्री भक्तमाल ग्रंथ में चंद्रदत्त कवि ने भक्त कवि जयदेव जी का चरित्र वर्णन किया है भक्तमाल अनुसार जयदेव जी को स्वयं श्री कृष्ण का सपने में साक्षात्कार हुआ था उन्होंने गीत गोविंद की रचना की। गीत गोविंद की अंतिम अष्टपदी भी स्वयं श्री जगन्नाथ भगवान श्री कृष्ण ने पूर्ण की थी तत्पश्चात महाप्रभु जयदेव अपनी पत्नी सहित मिलकर गीत गोविंद के पदों को गाते हुए आनंद में डूबे रहने लगे।[2]

संगीतिक पक्ष

अष्टपदियों का छंदवद्ध स्वरूप गेयता से युक्त होता है इसमें आठ पद होते हैं जो की नृत्य की लय के अनुरूप होते हैं मेवाड़ के महाराणा कुंभा ने गीत गोविंद ग्रंथ पर रसिक प्रिया नामक विस्तृत टीका लिखी। कुंभा ने अष्टपदियों में निहित श्रृंगार एवं भक्ति रस से ओतप्रोत काव्यात्मक शैली को शास्त्रीय संगीत के प्रबंध गायन शैली के अंतर्गत रखा और प्रत्येक अष्टपदी को उस समय में प्रचलित एक निश्चित राज व ताल में निबंध किया है जयदेव जी ने भी गीत गोविंद में प्रत्येक अष्टपदी को राग व ताल में निबंध ही बताया है रसिकप्रिया टीका में कुछ राग व तालो में परिवर्तन भी देखने को मिलता है।

प्रबंध चार धातु व छ अंगों से बद्ध रचना होती है जिसमें काव्य पक्ष एवं संगीत पक्ष दोनों का समावेश प्रमुख रूप से आवश्यक होता है प्रबंध में स्वर, विरूद,पद तेन,पाठ ताल इन 6 अंगों में से दो या दो से अधिक अंगों का होना शास्त्र के नियम अनुसार आवश्यक रहता है। अष्टपदियों में भगवान श्री कृष्ण व राधा के प्रेम मिलन का वर्णन काव्य पक्ष की दृष्टि से अति उत्तम है इन पदों में निहित श्रृंगार रस साथ ही राग, ताल, धातु,अंग,मूर्च्छना,भाव,क्रिया,कल्पना छंद,वैशिष्ट्य आदि सब इस प्रकार से प्रयोग किए गए हैं जैसे गागर में सागर।

गीत गोविंद एक अष्टपदी ग्रंथ

गीत गोविंद एक अनुपम एवं अद्भुत ग्रंथ है जिसके श्रृंगार प्रवाह के अंतस्थल में रहस्यमयी माधुर्य भावना की निगूढ़ धारा बह रही है समस्त संस्कृत साहित्य में इस तरह की उच्च कोटि की अनूठी मधुर रचना कोई दूसरी नहीं है।जयदेव के गीत गोविंद के अनुकरण पर संस्कृत साहित्य में अनेकों कवियों की रचना हुई किंतु किसी भी कवि द्वारा अपने काव्य में गीत गोविंद जैसी उत्कृष्टता एवं माधुर्यता नहीं लाई जा सकी।[3] सौंदर्य के दृष्टिकोण से अध्ययन हेतु गीत गोविंद काव्य का अनुशीलन करना चाहिए। इसके पद साहित्य से सौंदर्य,लालित्य,अलौकिक माधुर्य का संचार इस प्रकार होता है की संस्कृत से अपरिचित व्यक्ति भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता इसकी जैसी कोमलकांत पदावली संसार की किसी भी अन्य दूसरी भाषा के काव्य में दुर्लभ है।गीत गोविंद के मर्म को समझने एवं सामान्य जनमानस तक उसके सौंदर्य को प्रस्तुत करने एवं उसका प्रचार प्रचार करने के लिए लगभग 35 से अधिक विद्वानों ने प्रयास करके अनेक भाषाओं में गीत गोविंद की टीकाये उपलब्ध कराई है परंतु यह काव्य तो वह अगाध सागर है इसमें जो जितनी गहरी डुबकी लगाता है उसके हाथ में उतने ही दुर्लभ एवं बहुमूल्य रत्न आ जाते हैं।

गीत गोविंद की अष्टपदियों में निहित संगीतिक तत्व

"गीत गोविंद में वर्णित श्लोक -

श्री वासुदेव रतिकेलि कथा समेतमेतं करोति जयदेव कवि प्रबंधनम्।"[4]

उपर्युक्त श्लोक से यह पता चलता है कि महाकवि जयदेव द्वारा अष्टपदी गीतों को प्रबंध संज्ञा दी गई थी।इसमें 24 अष्टपदियों को भिन्न-भिन्न राग व ताल में निबद्ध किया गया है गीत गोविंद की अलग-अलग टीकाओं और अनुवादों में रागों की संख्या 9 से 13 के बीच में भिन्न-भिन्न पाई जाती है महाराणा कुंभा ने रसिक प्रिया टीका में गायन के विषय में वर्णन किया है-

नाट्यस्य विद्यते लक्षणं सर्वोगैरूपलक्षितम्।

अतः स्वरादिभिः सद्भिरन्यैः संयोज्य कथ्यताम्।।[5]

अन्य टीकाकार लक्ष्मण सूरी ने गीत गोविंद के अनुवाद में अष्टपदियों के 24 प्रबंधों का पुरुष रागों के क्रम में गायन बताया। इसके बाद दो स्त्री रागों का गायन हो, स्त्री रागों को पुरुष रागों का पूरक बताया है। उनके अनुसार 24 प्रबंध को तीन समान वर्गों में विभाजित किया जाना चाहिए-पुरुष स्त्री और नपुंसक जिनमें से प्रत्येक वर्ग में आठ गीत शामिल हो। इन प्रबंधो में मुख्य रूप से मालव गुर्जरी,बसंत, कर्नाट, देशाख्या, वराली,गुणकली, भैरवी, रामकरी आदि विशिष्ट रागों का उल्लेख मिलता है उदाहरण के लिए प्रथम प्रबंध में प्रयुक्त राग का नाम मालव है जबकि किसी-किसी टीका में इसका नाम मालव गॉड या मालवगौर भी प्राप्त होता है द्वितीय प्रबंध में गुर्जरी राग है अन्य विद्वानों ने दक्षिण गुर्जरी या मंगल गुजरी भी बताया है तीसरे प्रबंध में बसंत राग प्रयुक्त हुआ है, चतुर्थ प्रबंध में रामकली राग प्रयुक्त हुआ है, पंचम प्रबंध गुर्जरी राग में निबंध है छठे प्रबंध में मालव राग प्रयुक्त हुआ है, कहीं कहीं उड़िया अनुवादों में गुणकरी भी मिलता है रसिक प्रिया में मालव गौड एवं रसमंजरी में गॉडमालव राग भी बताया गया है।,सप्तम प्रबंध गुर्जरी राग में निबंध बताया है आठवें प्रबंध में कर्नाट राग प्रयुक्त हुआ है रस मंजरी में कन्नड़ और श्रुति रंजनी में कर्णाटगौड राग में निबद्ध बताया है, नवे प्रबंध में देशाख्य राग प्रयुक्त किया गया है।[6]

इस प्रकार से प्रत्येक अष्टपदी प्रबंध को एक निश्चित राग में निबद्ध किया गया है यह राग अलग-अलग विद्वानों ने अपने समयकाल व प्रचलन अनुसार परिवर्तित भी किए हैं अतः प्राचीन काल से वर्तमान काल तक अष्टपदी शास्त्रीयसंगीत की जीवंत धारा के रूप में अस्तित्व में रही है।

अष्टपदी गायन की प्रचलित परंपराएं

बंगाल में गीत गोविंद की जीवन्त परंपरा - जयदेव की परंपरा के तुरंत बाद ही 14वीं शताब्दी में सबसे पुराने बंगाली कवि चंडीदास ने अपनी बांग्ला कविता में जो श्री कृष्ण कीर्तन के नाम से विख्यात है उसमें गीत गोविंद को अपना लिया उन्होंने गीत गोविंद के कई पदों का बंगला में अनुवाद किया और अपनी रचना में भी लिया। यद्यपि गीत गोविंद का प्रचलन बंगाल एवं बंगाल के अन्य निकटवर्ती क्षेत्र उड़ीसा, मिथिला आदि में भी हो

गया।मध्ययुगीन बंगाल में 'कृष्ण यात्रा' के रूप में एक लोक नाटक विकसित हुआ जो मुख्यतः जयदेव के गीत गोविंद पर ही आधारित था जयदेव के नाम पर केंदुली गांव में वार्षिक मेला सर्दियों (शीत ऋतु) में आयोजित होता है।[7]

नवदीप के वैष्णव अभी तक अपने दैनिक धार्मिक कृत्यों के दौरान जयदेव के गीत गोविंद के पदों को विशेष रूप से महाप्रभु के घर में स्थित मंदिर में भगवान चैतन्य की मूर्ति के सम्मुख आरती करने के दौरान गाते हैं बंगाल के सभी पेशेवर कीर्तनियों को आज भी गीत गोविंद के कुछ महत्वपूर्ण पद याद है जिनका नित्य प्रति गायन बांग्ला अखारस के साथ कीर्तन की शास्त्रीय शैली में करते हैं।

उड़ीसा की परंपरा में भी अष्टपदियों का प्रचलन है गीत गोविंद के रचयिता जयदेव महाप्रभु का जन्म उड़ीसा की केन्दु बिल्व में माना जाता है इसी कारण उड़ीसा में पुरी के जगन्नाथ मंदिर में 12वीं शताब्दी से ही गीत गोविंद की अष्टपदियों को सेवा अंग के रूप में गाया जाता है यहां देवदासी परंपरा में अष्टपदियों को गाथा के रूप में नृत्य संगीत के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

ओडिसी संगीत और ओडिसी नृत्य में प्रयुक्त संगीत गीत गोविंद पर आधारित है उड़ीसा के आसपास के क्षेत्रीय गीतों में भी जैसे भजन, छउ नृत्य और रासलीला आदि में भी गीत गोविंद की अष्टपदियाँ गायीं जाती है जयदेव की अष्टपदियों ने ओडिसी संगीत को भाव भक्ति का श्रृंगारात्मक स्वरूप दिया है।

शास्त्रीय नृत्य और अष्टपदी का अंतर्संबंध

नाट्य शास्त्र में चार प्रकार के अभिनय बताये गए है - आंगिक, बाचिक, सात्विक आहार्य। अष्टपदियों को इनमें से सात्विक अभिनय और आंगिक अभिनय जैसे हस्त मुद्राएं आदि के प्रदर्शन में विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। अष्टपदियों के शब्द इतने काव्यात्मक और सौंदर्यात्मक होते हैं कि नर्तक सहज और स्पष्ट रूप से राधा की विरह अवस्था, कृष्ण की व्याकुलता, सखी की चतुराई को आंखों और चेहरे की हाव-भाव से दर्शा सकता है अर्थात अष्टपदी के पदों में निहित साहित्य को नृत्य में मुद्राओं के माध्यम से बड़े ही सहज भाव से दर्शाया जाता है। समय के साथ जब अष्टपदी दक्षिण भारत में प्रसिद्ध हो गई ओडिसी नृत्य के साथ भरतनाट्यम मोहिनीअट्टम आदि नृत्यों में भी अष्टपदियों का प्रयोग किया जाने लगा। अष्टपदी पर आधारित भरतनाट्यम में राधा और कृष्ण के दिव्य प्रेम को कई तरीकों से दिखाया गया अष्टपदियों में निहित संगीत सहित्य अभिनय और नृत्य का तालमेल भरतनाट्यम में असरदार साबित हुआ।

अष्टपदी को सबसे पहले दक्षिण भारत में डांस के लिए 1957 में अडयार कला क्षेत्र में रुक्मिणी देवी ने पेश किया था गीत गोविंद की दसवीं अष्टपदी 'बहति मलयसमीरे मदनम उपनिध्याय'आनंद भैरवी राग और आदि ताल में प्रस्तुत किया था।[8]

शोध प्रविधि:- प्रस्तुत शोध पत्र की प्रकृति ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक है। यह शोध अष्ट परी के दार्शनिक साहित्यिक और कलात्मक पक्ष पर आधारित है अतः इसमें गुणात्मक शोध विधि भी प्रयुक्त हुई है।

निष्कर्ष

समय के अनवरत प्रवाह के साथ अष्टपदी गायन शैली ने भारत के विभिन्न भौगोलिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में स्थान विशेष को आत्मसात करते हुए अनेक प्रचलित और समृद्ध परंपराओं को जन्म दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में अष्टपदियों के स्वरूप गीत गोविंद और उसमे वर्णित राष्ट्रपतियों का संगतिक पक्ष आदि का वर्णन करते हुए राष्ट्रपति गायन की प्रश्नपराओं का वर्णन किया गया है जिसमें बंगाल की परंपरा में अष्टपदी गायन ने बाउल कीर्तन पद आदि शैलियो को प्रभावित किया। जयदेव महाप्रभु के श्री कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति भाव ने अष्टपदियों को एक अत्यंत भावुक और रसात्मक भक्ति संकीर्तन रूप प्रदान किया जो आज भी वहां के सांस्कृतिक उत्सवों में गूंजता है। उड़ीसा की परंपरा में पूरी के जगन्नाथ मंदिर की दैनिक सेवा अनुष्ठानों में अष्टपदी का गायन प्रमुख अंग बना जिसे महाप्रभु की सेवा के रूप में शास्त्रीय संगीत के नियमों के अंतर्गत गाया जाता है।

दक्षिण भारत के संदर्भ में केरल के मंदिरों में प्रचलित सोपान संगीत की परंपरा एवं कर्नाटक संगीत पद्धति के अंतर्गत भजन संप्रदाय में भी अष्टपदियों का गायन अक्षुण्य बना हुआ है इसके साथ ही शास्त्रीय नृत्यो में भी अष्टपदी का अनुप्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाने लगा है।

ओडिसी, भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, कथकली जैसे प्रतिष्ठित शास्त्रीय नृत्यों में सात्विक, आंगिक अभिनय के लिए अष्टपदी को सर्वोत्कृष्ट और सार्वभौमिक आधार माना गया है मुख्य रूप से ओडिसी नृत्य की संपूर्ण संरचना एवं भाव अभिव्यक्ति का विकास गीत गोविंद की अष्टपदियों पर ही आधारित हुआ है अष्टपदियों में वर्णित नायक नायिका भेद शास्त्रीय नृत्य के रस सिद्धांत की व्यावहारिकता को प्रस्तुत करते हैं। रंगमंच पर राग व

ताल में निबद्ध अष्टपदी का गायन प्रस्तुत होता है तो नर्तक हस्त मुद्राओं, नेत्र संचालन और सात्विक अभिनय व वेशभूषा के माध्यम से उन सूक्ष्म और अमूर्त भावों को दर्शकों के समक्ष आसानी से प्रत्यक्ष प्रकट कर देता है। इस प्रकार अष्टपदी गायन ने शास्त्रीय संगीत की गायन व नृत्य विधाओं को एक अत्यंत समृद्ध, आध्यात्मिक और भावनात्मक आयाम प्रदान किया है।

अष्टपदी गायन शैली ने मध्यकाल से लेकर वर्तमान काल तक के राजनीतिक परिवर्तनों, सांस्कृतिक संक्रमणों, राज दरबारी आघातो,विदेशी आक्रमणों जैसी हर परिस्थिति को पार करते हुए वर्तमान में भी शास्त्रीय संगीत जगत में एक अनूठी छाप बनाई हुई है इससे यह सिद्ध होता है कि अष्टपदी गायन शैली प्राचीन काल की रूढ़ियों से बधीं हुई कोई मृत विधा नहीं है बल्कि यह निरंतर प्रवाहमान एक ऐसी त्रिवेणी है जिसमें संगीत, साहित्य और नृत्य का अनुपम संगम होता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में अष्टपदी की प्रासंगिकता और उसके अस्तित्व का मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि तकनीकी विकास और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के बावजूद यह गायन शैली आज भी अपनी शास्त्रीय गरिमा के साथ जीवन्त है।

मध्यकाल की संगीत परंपरा से लेकर आधुनिक फ्यूजन संगीत तक में अष्टपदी के पदों का प्रयोग किया जाता है आज के दौर में कुछ प्राचीन गायन शैलियों के मूल स्वरूप में ह्रास का संकट भी दिखाई देता है जिसके लिए वर्तमान संगीतकारों और शोधकर्ताओं को सजग रहने की आवश्यकता है अष्टपदी मात्र एक गेय काव्य विधा नहीं अपितु भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य परंपरा को जोड़ने वाला एक जीवंत ऐतिहासिक सेतु है अतः कह सकते हैं कि अष्टपदी गायन शैली ने शास्त्रीय नृत्य को अभिनय का सबसे सशक्त और रसमय माध्यम उपलब्ध कराया है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, श्री वत्स सोमदेव,1980 खंड 21 रौद्र बर्ष चित्रा वैकासी,
2. श्री नाभाजी, 2012 श्री रामानंद पुस्तकालय, सुदामा कुटी वृंदावन।
3. जयदेव (2003) गीत गोविंद (कृ. शं. शर्मा, अनु.), राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, सदाशिव परिसर।
4.जयदेव, गीत गोविंद [मूल संस्कृत]।
5. कुम्भा, म. (2015). रसिक प्रिया: टीका गीत गोविंद_ (शि. प्र. द्विवेदी, भावप्रकाशिका हिन्दी व्याख्या)। चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
6. गर्ग, ल. ना. (1985) अभिनय दर्पण और गीत गोविंद, संगीत कार्यालय।
7. वात्स्यायन कपिला,2015 (छटा संस्करण) गीत गोविंद काव्य तथा विवेचन, लोकभारती प्रकाशन।
8. Beena, Dr. D. (2020) Ashtapadi In Dance Recitals, New Bhartiya Book Corporation Delhi.